



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 597]
No. 597]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 1 नवम्बर 29, 1994/अग्राहायण 8, 1916
NEW DELHI, THURSDAY, NOVEMBER 29, 1994/AGRAHAYANA 8, 1916

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

अधिसूचना

बम्बई, 29 नवंबर, 1994

का. जा. 855(अ) --यनः भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड संतुष्ट है कि व्यापार-हित और जन-हित में यह आवश्यक है कि स्टॉक एक्सचेंज, बंबई द्वारा बनायी गयी उप-विधियां निम्न प्रावधानों के अनुसार संशोधित की जानी चाहियं:

यनः अब भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड, प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियमन 1956 (1956 का 43) की धारा 10 की उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा स्टॉक एक्सचेंज, बंबई की उप-विधियों में निम्नलिखित अनुसूची में विनिर्दिष्ट संशोधन करता है, और उक्त धारा की उप-धारा 4 के परंतुक के अनुसरण में भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड, व्यापार-हित और जन-हित में तथा ग्राहकों और दलालों के बीच संव्यवहारों के अधिलक्ष्य विनियमन को सुलभ बनाने के लिए, उप-विधियों में उक्त संशोधनों के पूर्व प्रकाशन की शर्त का एतद्वारा अभिमोचन करता है।

अनुसूची

विद्यमान उप-विधि 247 के बाद, निम्नलिखित उप-विधि 247 में अंतःस्थापित की जायेगी:

"ग्राहकों और दलालों के बीच संव्यवहारों का विनियम 247 ए" इस उप-विधियों में समाहित के प्रतिकूल कोई बात होते हुए निम्नलिखित ग्राहकों और दलालों के बीच संव्यवहारों को विनियमित करेगा: --

(1) यह सभी सदस्य दलालों के लिए अनिवार्य होगा कि वे ग्राहकों का धन एक अलग खाते में और अपना निजी धन एक अलग खाते में रखें। ऐसे संव्यवहारों के लिए, जिनमें सदस्य दलाल एक प्रधान की स्थिति में भाग ले रहा है, ग्राहकों के खाते से कोई सुगतान करना अनुमत नहीं होगा। उपरोक्त सिद्धांत और परिस्थितियों का विस्तृत विवरण, जिनके अन्तर्गत प्राइमर ब्रोकेर से सदस्य दलाल के खाते में अंतरण अनुमत होगा, नीचे दिया गया है:

(क) सदस्य दलाल को खाते रखना है: --प्रत्येक सदस्य दलाल ऐसी खाता-बहियां रखेगा जो एक सदस्य के रूप में उसके व्यापार के संबंध में निम्नलिखित को वृत्ति और पृथक्-पृथक् दिखाने के लिए आवश्यक होगी।

(1) उसके प्रत्येक ग्राहक से या उसके कारण प्राप्त और प्रत्येक ग्राहक को या उसके कारण प्रदत्त धन और,

(2) सदस्य के कारण प्राप्त और उसके कारण प्रदत्त धन।

(ख) "ग्राहकों के खातों" में धन का भुगतान करने की बाध्यता:—प्रत्येक सदस्य दलाल जो किसी ग्राहक के लिए धन धारण (रखता) या प्राप्त करता है, सदस्य के नाम में रखे जाने वाले चालू या जमा खाते में, जिसके शीर्ष में "ग्राहक" शब्द होगा (इसके पश्चात् "ग्राहक का खाता उल्लिखित होगा), ऐसा धन तुरन्त अदा करेगा सदस्य दलाल सभी ग्राहकों के लिए एक समेकित खाता या प्रत्येक ग्राहक के नाम में खाते, जैसा वह उचित समझे, रख सकेगा; परन्तु कि जब कोई सदस्य दलाल ऐसा बैंक या ड्राफ्ट प्राप्त करता है, जो अंशतः सदस्य को देय धन का प्रतिनिधित्व करे, वह ऐसे बैंक या ड्राफ्ट की पूरी अदायगी ग्राहकों के खाते में करेगा और तदनंतर निम्नलिखित पैरा घ (ii) में विनिर्दिष्ट के अनुसार अन्तरण करेगा।

(ग) "ग्राहकों के खाते" में अदा किया जाने वाला धन:—निम्नलिखित के अतिरिक्त कोई धन ग्राहकों के खाते में अदा नहीं किया जायेगा—

- (1) ग्राहकों के कारण धारित या प्राप्त धन,
- (2) सदस्य से संबंधित ऐसा धन जो खाता खोलने या बनाये रखने के प्रयोजन के लिए आवश्यक हो;
- (3) नीचे दिये गये पैरा घ के उल्लंघन में खाते से भूलवश या दुर्घटनावश आहरित की गई राशि के प्रतिस्थापन के लिए धन;
- (4) सदस्य को प्राप्त बैंक या ड्राफ्ट जो अंशतः ग्राहक से संबंधित धन और अंशतः सदस्य को देय धन का प्रतिनिधित्व करता है।

(घ) "ग्राहकों के खाते" से आहरित किया जाने वाला धन—निम्नलिखित के अतिरिक्त कोई धन ग्राहकों के खाते से आहरित नहीं किया जायेगा—

- (1) ग्राहकों को या ग्राहकों की ओर से या ग्राहकों से सदस्य को देय ऋण के भुगतान के लिए या भुगतान के संबंध में उचित रूप से आवश्यक धन या ग्राहक के प्राधिकार पर आहित धन, या ऐसा धन जिसके संबंध में ग्राहक की सदस्य के प्रति देयता है, परन्तु यह कि इस प्रकार आहरित धन किसी भी हालत में ऐसे प्रत्येक ग्राहक के लिए उस समयधारित कुल धन से अधिक न हो;

- (2) सदस्य से संबंधित ऐसा धन जो ऊपर दिये गये पैरा 1 ग (ii) या 1 ग (iv) के अन्तर्गत ग्राहक के खाते में अदा कर दिया गया हो;

- (3) वह धन जो भूलवश या दुर्घटनावश उपर्युक्त पैरा ग के उल्लंघन में ऐसे खाते में अदा कर दिया गया हो।

(क) धारणाधिकार, मुजराई आदि का अधिकार प्रभावित नहीं होगा:— इस पैरा 1 में कुछ भी किसी सदस्य दलाल को ग्राहकों के खाते में जमा रखे गये धन के संबंध में किसी अवलंब या अधिकार से, धारणाधिकार, मुजराई, प्रतिपादा द्वारा या अन्यथा वंचित नहीं करेगा।

सभी सदस्य दलालों के लिए यह अनिवार्य होगा कि वे ग्राहकों की प्रतिभूतियों के लिए अलग खाते रखें और ऐसी प्रतिभूतियों की अपनी प्रतिभूतियों से अलग दशनि के लिए ऐसी वेब-वहियां रखें, जैसी आवश्यक हों। अन्य बातों के साथ-साथ, ग्राहकों की प्रतिभूतियों के लिए ऐसे खाते, निम्नलिखित का भी प्रबंध करेंगे:—

(क) बाजार में विक्रय के लिए प्राप्त या संबंधित सुपुर्दगी के लिए रखी गयी प्रतिभूतियां;

(ख) ग्राहकों को सुपुर्दगी के लिए संबंधित पूर्णतः प्रदत्त प्रतिभूतियां;

(ग) ग्राहक या उसके नामित [नामितियों] के नाम पर, सदस्य को अंतरण के लिए प्राप्त या उसके द्वारा अंतरण के लिए भेजी गयी प्रतिभूतियां;

(घ) प्रतिभूतियां, जो पूर्णतः प्रदत्त हैं और प्रतिभूति/माजिन आदि के रूप में सदस्य द्वारा अभिरक्षा में रखी गयी हैं। सदस्य उक्त के लिए ग्राहक से उपयुक्त प्राधिकार प्राप्त करेगा;

(ङ) सीमांत [माजिन] अपेक्षाओं आदि के लिए सदस्य के नाम में रजिस्ट्रीकृत, ग्राहक की पूर्णतः प्रदत्त प्रतिभूतियां, यदि कोई हों।

(च) ब्याज बदला पर दी गई प्रतिभूतियां। सदस्य उक्त के लिए ग्राहकों से प्राधिकार प्राप्त करेंगे।

(3) सदस्य दलाल प्राप्ति दिवस से दो कार्य दिवसों के भीतर अपने ग्राहकों को भुगतान करेगा या खरीदी गई प्रतिभूतियां की सुपुर्दगी करेगा जब तक कि ग्राहक अन्यथा अनुरोध न करे। स्टॉक एक्सचेंज प्राप्ति-दिवस के तुरन्त बाद प्रेस-विज्ञप्ति जारी करेगा।

(4) सदस्य दलाल संविदा के निष्पादन के 24 घंटों के भीतर ग्राहक को प्रतिभूतियां की खरीद/बिक्री के लिए संविदा नोट जारी करेगा।

(5) ग्राहकों की ओर से खरीद के मामले में यदि ग्राहक संविदा के निष्पादन के लिए, सदस्य दलाल को, नकद शेयरों के लिए संविदा नोट की सुपुर्दगी के दो दिनों के अंदर तथा विनिर्दिष्ट शेयरों के लिए सात दिनों के अन्दर या भुगतान-दिवस से पहले [स्टॉक एक्सचेंज द्वारा संबद्ध निपटान अवधि के लिए यथा-निर्धारित], जो भी पहले हो पूरा भुगतान करने में असफल रहता है तो सदस्य दलालों को छूट होगी कि वे प्रतिभूतियों की बिक्री द्वारा संव्यवहार समाप्त कर दें, जब तक कि ग्राहक का सदस्य के पास पहले से ही समतुल्य जमा न हो। इस संबंध में होने वाली हानि, यदि कोई हो, उस ग्राहक की माजिन राशि से पूरी की जायेगी।

(6) ग्राहकों की ओर से विक्रय के मामले में यदि ग्राहक, संविदा नोट की सुपुर्दगी के 48 घंटों के अन्दर या सुपुर्दगी दिवस [संबद्ध निपटान अवधि के लिए स्टॉक एक्सचेंज के प्राधिकारियों द्वारा यथानिर्धारित] से पहले, जो भी पहले हो, बैंड अंतरण प्रलेखों के साथ बेची गयी प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी करने में असफल रहता है तो सदस्य दलालों को खरीद द्वारा संविदा समाप्त करने की छूट होगी। इस संव्यवहार में होने वाली हानि, यदि कोई हो, उस ग्राहक की माजिन राशि में से कटौती योग्य होगी।

[एफ. संख्या 1/60/एस. ई./94]

एस. एस. नाडकर्णी, अध्यक्ष,
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA

NOTIFICATION

Bombay, the 29th November, 1994

S.O. 855(E).—Whereas the Securities and Exchange Board of India is satisfied that it is necessary in the interest of trade and public interest that the bye-law made by the Stock Exchange, Bombay should be amended as provided hereunder :

Now therefore in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 10 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of

1956), The Securities and Exchange Board of India hereby makes the amendment to the bye-laws of The Stock Exchange, Bombay specified in the Schedule below, and in pursuance of the proviso to sub-section (4) of that section, the Securities and Exchange Board of India, in the interest of the trade and in public interest and to facilitate regulation of transactions between clients and brokers without delay hereby dispenses with the condition of previous publication of the said amendments to the bye-laws.

SCHEDULE

After the existing bye-law 247, the following bye-law being 27A shall be inserted :

"247A REGULATION OF TRANSACTIONS BETWEEN CLIENTS AND BROKERS

Notwithstanding anything to the Contrary contained in these Bye-laws, the following shall regulate the transactions between Clients and Brokers :

- (1) It shall be compulsory for all Member brokers to keep the money of the clients in a separate account and their own money in a separate account. No payment for transactions in which the Member broker is taking a position as a principal will be allowed to be made from the client's account. The above principles and the circumstances under which transfer from client's account to Member broker's account would be allowed are enumerated below.

(A) Member Broker to keep Accounts.—Every member broker shall keep such books of accounts, as will be necessary, to show and distinguish in connection with his business as a member—

- (i) moneys received from or on account of and moneys paid to or on account of each of his clients and,
- (ii) the moneys received and the moneys paid on Member's own account.

(B) Obligation to pay money into "clients accounts".—Every member broker who holds or receives money on account of a client shall forthwith pay such money to current or deposit account at bank to be kept in the name of the member in the title of which the word "clients" shall appear (hereinafter referred to as "clients account"). Member broker may keep one consolidated clients account for all the clients or accounts in the name of each client, as he thinks fit :

Provided that when a Member broker receives a cheque or draft representing in part money belonging to the client and in part money due to the Member, he shall pay the whole of such cheque or draft into the clients account and effect subsequent transfer as laid down below in para D(ii).

(C) What moneys to be paid into "clients account".—No money shall be paid into clients account other than—

- (i) money held or received on account of client;
- (ii) such money belonging to the Member as may be necessary for the purpose of opening or maintaining the account;
- (iii) money for replacement of any sum which may by mistake or accident have been drawn from the account in contravention of para D given below;
- (iv) a cheque or draft received by the Member representing in part money belonging to the client and in part money due to the Member.

(D) What moneys to be withdrawn from "clients accounts".—No money shall be drawn from clients account other than—

- (i) money properly required for payment to or on behalf of clients or for or towards payment of a debt due to the member from clients or money drawn on client's authority, or money in respect of which there is a liability of clients to the Member, provided that money so drawn shall not in any case exceed the total of the money so held for the time being for such each client
- (ii) such money belonging to the Member as may have been paid into the client account under para 1 C (ii) or 1 C (iv) given above;
- (iii) money which may by mistake or accident have been paid into such account in contravention of para C above.

(E) Right to lien, set-off etc., not affected.—Nothing in this para 1 shall deprive a Member broker of any recourse or right, whether by way of lien, set-off, counter-claim charge or otherwise against moneys standing to the credit of clients account.

- (2) It shall be compulsory for all Member brokers to keep separate accounts for client's securities and to keep such books of accounts as may be necessary, to distinguish such securities from his own securities. Such accounts for client's securities shall inter alia provide for the following :—
- (a) Securities received for sale or kept pending delivery in the market ;
 - (c) Securities fully paid for, pending delivery to clients ;
 - (c) Securities received for transfer or sent for transfer by the Member in the name of client or his nominee(s) ;
 - (d) Securities that are fully paid for and are held in custody by the Member as security|margin etc. Proper authorization from client for the same shall be obtained by Member ;
 - (e) Fully paid for client's securities registered in the name of Member, if any, towards margin requirements etc.;
 - (f) Securities given on Vyaj-badla. Members shall obtain authorization from clients for the same.
- (3) Member Brokers shall make payment to their clients or deliver the securities purchased within two working days of pay-out unless the client has requested otherwise. Stock Exchange shall issue a Press Release immediately after the pay-out.
- (4) Member brokers shall issue the contract note for purchase|sale of securities to a client within 24 hours of the execution of the contract.
- (5) In case of purchases on behalf of clients, Member brokers shall be at liberty to close out the transactions by selling the securities, in case the client fails to make the full payment to the Member Broker for the execution of the contract within two days of contract note having been delivered for cash shares and seven days for specified shares or before pay-in day (as fixed by Stock Exchange for the concerned settlement period), whichever is earlier; unless the client already has an equivalent credit with the Member. The loss incurred in this regard, if any, will be met from the margin money of that client.
- (6) In case of sales on behalf of clients, Member brokers shall be at liberty to close out the contract by effecting purchases if the client fails to deliver the securities sold with valid transfer documents within 48 hours of the Contract note having been delivered or before delivery day (as fixed by Stock Exchange authorities for the concerned settlement period), whichever is earlier. Loss on the transaction, if any, will be deductible from the margin money of that client."

[F. No. 1|60|SE|94]

S. S. NADKARNI, Chairman,
Securities and Exchange Board of India